5. निम्न पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

चंद चकोर की चाह करै, घनानंद स्वाति पपीहा को ध्यावै।
ज्यों त्रसरैनि के ऐन बसै रबि, मीन पै दीन ह्वै, सागर आवै।
मोसों तुम्हैं सुनौ जान कृपानिधि, नेह निबाहिबो यो छबि पावै।
ज्यों अपनी रुचि राचि कुबेर सुरंकहि लै निज अंक बसावै।

6. पृथ्वीरास रासो में युद्ध और शृंगार का वर्णन कीजिए।
7. कबीर के काव्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
8. सूरदास जी की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए।
9. विद्यापति के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

112

MAHD–01

December – Examination 2020

M.A. (Previous) Examination

HINDI

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Paper : MAHD-01

*Time : **2** Hours*] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. (i) 'डिंगल' क्या है ? संक्षिप्त में विचार व्यक्त कीजिए।

   (ii) रासो काव्य ग्रन्थों में पृथ्वीराज रासो को महत्त्वपूर्ण रचना क्यों माना जाता है ?

   (iii) कबीर की रचनाओं में 'बीजक' से क्या आशय है ?

(iv) मलिक मोहम्मद जायसी की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

(v) तुलसीदास द्वारा राजाराम के दरबार में दी जाने वाली अर्जी किस रचना के नाम से विख्यात है ?

(vi) 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' ग्रन्थ में रामचन्द्र शुक्ल ने सूरदास के जन्म-स्थान का उल्लेख किस नाम से किया ?

(vii) 'हिम्मत बहादुर की बिरुदावली' और 'गंगा लहरी' कृतियों के कवि का नाम बताइए।

(viii) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए :

(क) दामिनी

(ख) पुरहूत

(ग) कालिंदी

(घ) सयानप

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

2. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

साधो भाई, जीवत करो आसा।
जीवन समझे जीवत बूझे, जीवन मुक्ति निवासा॥
जीवन मरन की फाँसन काटी, मुये मुक्ति की आसा॥
तन घूटे जिव मिलन कहत है, सो सब झूठी आसा॥

अबहुँ मिला तो तबहूँ मिलेगा, नहिं तो जमपुर बासा॥
सत्त गई सत्त गुरु को यीन्हें, सत्तनाम विस्सासा॥
कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधन के दासा॥

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

लरिकाई कौ प्रेम, कहौं अलि, कैसे, करिकै छूटत ?
कहा कहौं ब्रजनाथ-चरित अब, अन्तरगति यों लूटत॥
चंचल चाल मनोहर चितवन, वह मुसुकाती मंद धुन गावत।
नटवर भेस नंदनंदन को, वह विनोद गृह इनतें आवत॥
चरन कमल की सपथ करति हौं, यह संदेश मोहि विष सम लागत।
सूरदास मोहि निमिष न बिसरत, मोहन मूरति सोवत जागत॥

4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हेरी म्हां तो दरद दिवाणी,
म्हारा दरद णा जाण्यां कोय।
जौहर कीमता जौहरां जाण्यां,
क्या जाणा जिण खोय।
दरद री मारयां दर दर डोल्यां,
बैद मिल्या णा कोय।
मीरा री प्रभु पीर मिटांगा
जद बैद सांवरो होय॥